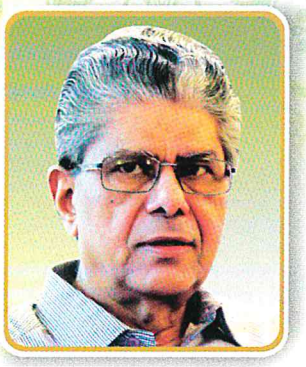
Padma Shri



Shri Veerendra Raj Mehta

Shri Veerendra Raj Mehta is a former civil servant. He has been involved in distinguished and exceptional social service for about 40 years. His work has received rare and unique international recognition and has been instrumental in generating tremendous international goodwill for India.

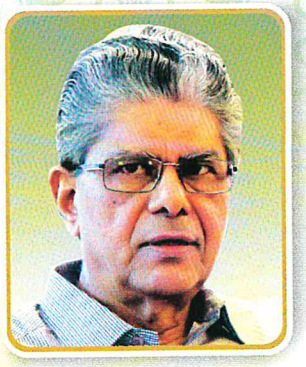
2. Born on January 12, 1934, Shri Mehta has worked for Government of India and with the Asian Development Bank in Manila. In more recent years he has been Independent Non-Executive Director & Chairman, Audit Committee of Tata Motors and is currently a Trustee of Sir Dorabji Tata Trust, Mumbai, one of India's oldest and most respected private trusts. He is a volunteer Executive Director, Bhagwan Mahaveer Viklang Sahayata Samiti (BMVSS), Jaipur and has been associated with it almost since its inception in 1975. BMVSS is the parent body of the world renowned JAIPUR FOOT that has so far transformed the lives of over 1.4 million people directly by providing them mobility and dignity.

3. While at the Asian Development Bank in the Philippines, in August 1986 Shri Mehta with his personal initiative and expense mobilized efforts to take JAIPUR FOOT to the Philippines to provide mobility and dignity to the Filipino disabled. These camps were highly appreciated in the host country and its print and electronic media. Later in 1989, he set up the Jaipur Foot organization at the Philippine Orthopaedic Centre, Manila. Shri Mehta was the founder President of this this non-profit organization, Mahaveer Philippines Foundation Inc. (MPFI). By its selfless work, MPFI quickly built up a huge reservoir of goodwill in the Philippines by its work of providing mobility and dignity to disabled Filippinos and by transfer of JAIPUR FOOT technology.

4. Disregarding concerns for personal safety, Shri Mehta has been actively and selflessly participating in BMVSS missions even in difficult environments. In July 2014 and earlier in 2005, he was co-leader of a team that went to Kabul, Afghanistan to fit JAIPUR FOOT limbs to amputees in that strife-torn country. Since 2012, BMVSS teams led by Shri Mehta have also been carrying out JAIPUR FOOT projects in Kashmir at Srinagar, and also at Baramula and Kupwara to cater to amputees along the Line-of Control. He also worked for providing immediate relief in providing temporary housing shelters to victims of the massive earthquake that hit Bhuj area of Gujarat in 2000.

5. During 1980-94 period, Shri & Smt. Mehta were closely associated with Mother Teresa's social and humanitarian work in the Philippines. Based on their intimate association with her they have jointly written a book "Mother Teresa - Inspiring Incidents", from Mother's work. The book was initially published in Hindi and later translated in English, Malayalarn and Telegu.

6. In a unique recognition of Shri Mehta's humanitarian services in the country, the City of Manila in its Resolution of December, 1993 presented them the Key of City of Manila and adopted them as Son and Daughter of Manila- a very rare honour and a first for any Indian. Even after his return to India in 1994, Shri Mehta has continued his association with the work of MPFI which has continued to expand. Therefore again, in 2010 on the occasion of the Silver Jubilee of MPFI, in an exceptionally rare honour, the Philippine House of Representatives (the Lower House of Parliament) adopted a special resolution in 2010 recognizing and appreciating Shri Mehta's continued help and guidance to MPFI in improving the reach and effectiveness of JAIPUR FOOT in the Philippines.



श्री वीरेन्द्र राज मेहता

श्री वीरेन्द्र राज मेहता, एक पूर्व सिविल अधिकारी हैं। आप लगभग 40 वर्षों से असाधारण और उत्कृष्ट सामाजिक सेवा में लगे रहे हैं। आपके काम को विरली और अनन्य अंतरराष्ट्रीय सराहना मिली है तथा आप भारत के लिए विस्मयकारी अंतरराष्ट्रीय सद्भाव क़ायम करने में सहायक रहे हैं।

2. आपका जन्म जनवरी 12, 1934 को हुआ। आपने भारत सरकार और मनीला में एशियाई विकास बैंक में काम किया। और ज़्यादा हाल ही के सालों में आप टाटा मोटर्स की ऑडिट कमेटी के स्वतंत्र ग़ैर कार्यपालक निदेशक और अध्यक्ष रहे हैं तथा इस समय आप भारत के सबसे पुराने और सबसे ज़्यादा सम्मानित ग़ैर सरकारी न्यासों में से एक, सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट मुम्बई के एक न्यासी (ट्रस्टी) हैं। आप भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बी एम वी एस एस), जयपुर के स्वयंसेवी कार्यपालक निदेशक हैं और सन् 1975 में हुई इस समिति की शुरूआत से ही इससे जुड़े रहे हैं। भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति, विश्वभर में प्रसिद्ध जयपुर फुट का मूल निकाय (पैरेंट बॉडी) है, जिसने अब तक 1.4 मिलियन से ज़्यादा लोगों को प्रत्यक्ष रूप से गतिशीलता और गरिमा प्रदान करके उनका कायाकल्प कर दिया है।

3. फिलीपींस में एशियाई बैंक में काम करने के दौरान, अगस्त, 1986 में आपने फिलीपींस के नि:शक्त (डिसएबल्ड) लोगों को गतिशीलता और गरिमा प्रदान करने के क्रम में जयपुर फुट को अपनी निजी पहल और ख़र्च पर फिलीपींस ले जाने के प्रयासों को आगे बढ़ाया। इन शिविरों की, मेज़बान देश और उसकी प्रिंट तथा इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में बहुत ज़्यादा सराहना की गई। बाद में सन् 1989 में आपने फिलीपीन ऑर्थोपैडिक सेंटर, मनीला में जयपुर फुट संगठन क़ायम किया। आप इस लाभ-निरपेक्ष संगठन-महावीर फिलीपींस फाउंडेशन आई एन सी (एम पी एफ आई) के संस्थापक अध्यक्ष हैं। एम पी एफ आई ने फिलीपींस के नि:शक्त (डिसएबल्ड) लोगों को अपने काम के द्वारा गतिशीलता और गरिमा प्रदान करके तथा जयपुर फुट की प्रौद्योगिकी का अंतरण (ट्रांसफर) करके, अपने ऐसे स्वार्थ-रहित काम के ज़रिए फिलीपींस में सद्भाव का एक अथाह भण्डार क़ायम किया।

4. अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बिना आप विकट परिस्थितियों, वातावरण और परिवेश में भी भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति के मिशनों में सक्रिय रूप से और नि:स्वार्थ भाव से हिस्सा लेते रहे हैं। जुलाई, 2014 में और उससे पहले सन् 2005 में आप उस टीम के सह-अगुआ (को-लीडर) रहे जो विकट संघर्ष से जूझ रहे देश अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में छिन्नांगों (एमप्युटीज) के जयपुर फुट लिंब्स लगाने के लिए गई थी। सन् 2012 से भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति की टीमें आपके नेतृत्व में, कश्मीर में श्रीनगर में और बारामूला तथा कुपवाड़ा में भी नियंत्रण-रेखा पर छिन्नांगों (एमप्युटीज) की स्वास्थ्य संबंधी ज़रूरतें पूरी करने के लिए जयपुर फुट परियोजनाएं चलाती आ रही हैं। आपने सन् 2000 में गुजरात में भुज क्षेत्र में आए ज़बरदस्त भूकंप के शिकार हुए लोगों को अस्थायी आवासन आश्रय (हाउजिंग शैल्टर्स) उपलब्ध करवाने की दिशा में तत्काल राहत मुहैया करवाने का भी काम किया।

5. सन् 1980 से 1994 तक की अवधि के दौरान आप और आपकी पत्नी फिलीपींस में मदर टेरेसा के सामाजिक और मानवता-परक लोकोपकारी कार्य से बहुत गहराई से जुड़े रहे। मदर टेरेसा से अपनी आत्मीयतापूर्ण नज़दीकी के आधार पर, आपने अपनी पत्नी के साथ मिलकर, संयुक्त रूप से, मदर के काम से, "मदर टेरेसा-प्रेरक घटनाएं" ("मदर टेरेसा-इंस्पाइरिंग इंसीडेंट्स") शीर्षक से एक पुस्तक लिखी है। यह पुस्तक आरंभ में हिंदी में प्रकाशित हुई और बाद में अंग्रेज़ी, मलयालम और तेलुगु में अनूदित हुई।

6. फिलीपींस देश में आपकी मानवता-परक और लोकोपकारी सेवाओं की अनूठी क़द्र और सराहना के फलस्वरूप, मनीला शहर ने अपने दिसम्बर,1993 के संकल्प में उन्हें (आपको और आपकी पत्नी को) की ऑव सिटी ऑव मनीला भेंट की और आपको तथा आपकी पत्नी को मनीला के पुत्र और पुत्री के रूप में अंगीकार किया- यह अब तक किसी भारतीय को प्रदान किया गया बहुत विरला और पहला सम्मान है। सन् 1994 में अपने भारत लौट आने के बाद भी आप महावीर फिलीपींस फाउंडेशन आई एन सी से अपना जुड़ाव क़ायम रखे हुए हैं और इस फाउंडेशन का विस्तार और प्रसार जारी है। अत: पुन: सन् 2010 में एम पी एफ आई की रजत जयंती के अवसर पर, एक अत्यंत असाधारण और विरली घड़ी में फिलीपींस हाउस ऑव रेप्रीजेंटेटिव्ज़ (द लोअर हाउस ऑव पार्लियामेंट) ने फिलीपींस में जयपुर फुट की पहुंच और प्रभावोत्पादकता को बेहतर बनाने में आपके द्वारा एम पी एफ आई को लगातार मुहैया करवाई सहायता और मार्गदर्शन की क़द्र और सराहना करते हुए, सन् 2010 में एक विशेष संकल्प अंगीकार किया।